विषयानुक्रमणिका

अध्याय एक

दलित स्त्री चेतना एक अध्ययन

1.1 चेतना अर्थ - स्वरूप - अवधारणा 1 - 6

1.1.1 चेतना शब्द की परिभाषा

1.1.2 चेतना का स्वरूप

1.2 स्त्री चेतना अर्थ - परिभाषा 7 - 13

1.2.1 स्त्री चेतना शब्द अर्थ एवं परिभाषा

1.2.2 स्त्रीवाद

1.2.3 स्त्री विमर्श

1.2.4 दलित स्त्री की अवधारणा

1.3 दलित शब्द व्युत्पत्ति एवं अर्थ 14 - 17

1.4 दलित साहित्य सामान्य परिचय 17 - 19

1.5 दलित साहित्य की परिभाषाएँ 19 - 20

1.6 दलित साहित्य स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ 21 - 23

1.7 भारतीय दलित साहित्य 23 - 31

1.7.1 मराठी दलित साहित्य

1.7.2 तेलुगु दलित साहित्य

1.7.3 कन्नड़ दलित साहित्य

1.7.4 हिंदी दलित साहित्य

1.8 हिन्दी दलित कहानी स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ - विभिन्न परिदृश्य 32 - 42

1.8.1 दलित कहानियों का सामाजिक परिदृश्य

1.8.2 दलित कहानियों का राजनीतिक परिदृश्य

1.8.3 दलित कहानियों का सांस्कृतिक परिदृश्य

1.8.4 दलित कहानियों का आर्थिक परिदृश्य

1.8.5 दलित कहानियों का धार्मिक परिदृश्य

❖ निष्कर्ष 43

संदर्भग्रंथ सूची 44 - 46

अध्याय दो
हिन्दी की प्रमुख दलित कहानियाँ एवं स्त्री पात्र

2.1 'जंगल की रानी' - कमली 48

2.2 'कजली' - कजली, कजली की माँ 49

2.3 'यात्रा' - मुरिया 50

2.4 'इज्ज़त' - उषा 51

2.5 'सुमंगली' - सुगिया 52

2.6 'अंगारा' - जमना 54

2.7 'अंतिम बयान' - अतरो 54

2.8 'यह अंत नहीं' - बिरमा 55

2.9 'ए.टी.एम' - सुमित्रा 56

2.10 'मैं पढ़ूंगी' - गुड़िया 57

2.11 'गुफाएँ' - अपूर्वा 58

2.12 'जीत' - रेखा 59

2.13 'हार गयी ज़िदगी' - रोशनी, सुमन 60

2.14 'नयी धार' - रमा 61

2.15 'प्रतिकार' - मीता, सुरेश का पत्नी 62

2.16 'हाथ तो उग ही आते हैं' - सूतो, रुक्खो 63

2.17 'चोट' - रज्जो 64

2.18 'सुनीता' - सुनीता 64

2.19 'टूटता वहम' - लेखिका 65

2.20 'सिलिया' - सिलिया, सिलिया की माँ 67

2.21 'ग्रहण'- बिरम की बहू 68

2.22 'छोटी बहू' - बुआ 69

2.23 'अम्मा' - अम्मा 70

2.24 'खानाबदोश' - मानो, किसनी 71

2.25 'अमली' - अमली, तिमगढ़ राज की रानी 72

2.26 'जिनावर' - बिरजू की बहू 73

2.27 'कर का मनका डारिके' - सुवर्णा महेसकर 74

2.28 'त्रिशूल' - रेणु, पार्वती 74

2.29 'अरथी' - गंगादेई 75

2.30 'चरिता' - चरिता 76

2.31 'सरोगेट मदर' - फूलमती 76

2.32 'महू' - प्रज्ञा 77

2.33 'साक्षात्कार' - प्रतिभा 78

2.34 'छौआ माँ' - छौआ माँ 79

2.35 'मेरा समाज' - लेखिका 80

2.36 'बदला' - सुशीला टाकभौरे 80

2.37 'नालियाँ' - नविता 81

2.38 'उमा चली गयी दिल्ली' - उमा 82

2.39 'हम कौन है' - अज्जू 83

2.40 'बदबू' - संतोष 84

2.41 'पगड़ी' - सरबतिया 85

❖ निष्कर्ष 85

संदर्भग्रंथ सूची 87 - 89

अध्याय तीन

दलित स्त्री कहानियों में अस्मिता बोध एवं जीवन संघर्ष - चुनी हुई कहानियों के सन्दर्भ में

3.1 दलित स्त्री: अस्मिता एवं जीवन संघर्ष 91 - 97

3.1.1 अस्मिता अर्थ एवं अवधारणा

3.1.2 अस्मिता की परिभाषा

3.1.3 दलित अस्मिता का स्वरूप

3.1.4 जीवन संघर्ष

3.2 दलित स्त्री अस्मिता एवं जीवन संघर्ष - सामाजिक परिप्रेक्ष्य 97 - 103

3.2.1 मज़दूरों का ज़मीन्दारों से संघर्ष

3.2.2 स्त्री का पुरुष से संघर्ष

3.2.3 दलित लड़कियों की शिक्षा से जुड़े संघर्ष

3.2.4 अस्मिता की खोज से जुडे संघर्ष

3.3 दलित स्त्री अस्मिता एवं जीवन संघर्ष -आर्थिक परिप्रेक्ष्य 104 - 109

3.3.1 दलित स्त्रियों के श्रम का शोषण

3.3.2 आर्थिक शोषण

3.3.3 दलितों का शहर के प्रति आकर्षण

3.4 दलित स्त्री अस्मिता एवं जीवन संघर्ष - स्कृतिक-धार्मिक परिप्रेक्ष्य 109 - 119

3.4.1 धर्म के शिकार बनी दलित स्त्री

3.4.2 अस्पृष्यता एवं धार्मिक आडंम्बर

3.4.3 पुर्नजन्म पर आधारित कहानियां

3.4.4 अन्धविश्वास पर आधारित कहानियां

❖ निष्कर्ष 119

संदर्भग्रंथ सूची 120 - 122

अध्याय चार

दलित स्त्री प्रतिरोध - चुनी हुई कहानियों के सन्दर्भ में

4.1 प्रतिरोध का ऐतिहासिक परिदृश्य 124 - 132

4.1.1 आधुनिकता में नई पीढ़ी का प्रतिरोध

4.1.2 प्रतिरोध के विभिन्न परिवेश साहित्य के संदर्भ में

4.1.3 स्त्री का प्रतिरोधःइतिहास के आइने में

4.1.4 दलित स्त्री प्रतिरोध और साहित्य जगत

4.2 दलित स्त्री एवं प्रतिरोध -सामाजिक परिप्रेक्ष्य 132 - 140

4.2.1 पारिवारिक ढाँचे के खिलाफ प्रतिरोध

4.2.2 व्यवस्था और शोषण का प्रतिरोध

4.2.3 बलात्कार के ख़िलाफ़ प्रतिरोध

4.2.4 परिवार में लैंगिक भेदभाव का प्रतिरोध

4.2.5 पितृसत्तात्मक समाज के खिलाफ प्रतिरोध - साक्षातकार

4.2.6 यौनिकता पर पुरुषों का नियंत्रण - बदबू

4.3 दलित स्त्री एवं प्रतिरोध - आर्थिक परिप्रेक्ष्य 140 - 146

4.3.1 शिक्षित और आर्थिक आत्मनिर्भर बनी स्त्री का प्रतिरोध

4.3.2 कामकाजी क्षेत्र की पीडएँ

4.3.3 आवास की समस्या

4.3.4 आरक्षण व्यवस्था

4.4 दलित स्त्री एवं प्रतिरोध -राजनैतिक परिप्रेक्ष्य 146 - 149

4.4.1 भय और हिंसा की राजनीति का प्रतिरोध

4.4.2 जाति की राजनीति पर उभरता प्रतिरोध

4.4.3 वोट की राजनीति

4.5 दलित स्त्री एवं प्रतिरोध -धार्मिक - सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य (हरिजन) 149 - 159

4.5.1 रीति रिवाज़, अन्धविश्वास एवं रूढियों के प्रति- प्रतिरोध(धार्मिक)

4.5.2 अस्पृष्यता एवं धार्मिक आडंबर(धार्मिक)

4.5.3 भाग्य (नियति) (धार्मिक)

4.5.4 देवदासी प्रथा (धार्मिक)

4.5.5 प्रथाओं एवं परंपराओं के प्रति - प्रतिरोध (सांस्कृतिक)

4.5.6 खान-पान एवं रहन सहन की स्वीकृति (सांस्कृतिक)

4.5.7 स्थानीय-बोली भाषा की स्वीकृति (सांस्कृतिक)

❖ निष्कर्ष 159

संदर्भग्रंथ सूची 160 - 164

अध्याय पाँच

आधुनिक दलित कहानियों का शिल्प एवं भाषा वैशिष्ट्य

5.1 शिल्प 165 - 169

5.1.2 शिल्प का अर्थ

5.1.3 शिल्प की परिभाषा

5.1.4 शिल्प का स्वरूप

5.1.5 शिल्प का महत्व

5.2 शिल्पगत वैशिष्ट्य 169 - 193

5.2.1 विषयवस्तु

5.2.2 कथानक

5.2.2.1 आरंभ

5.2.2.2 मध्य

5.2.2.3 अन्त

5.2.3 चरित्र चित्रण

5.2.4 देशकाल तथा वातावरण

5.2.5 शीर्षक का प्रयोजन

5.2.6 भाषा शैली

5.2.6.1 वर्णनात्मक शैली

5.2.6.2 आत्मकथा शैली

5.2.6.3 स्वप्न शैली

5.2.6.4 संवाद शैली

5.2.6.5 चित्रात्मक शैली

5.2.6.6 नाटकीय शैली

5.2.6.7 फैंटैसी

5.3 आधुनिक दलित कहानियों में भाषा वैशिष्ट्य **194 - 195**

5.4 शब्द चयन **195 - 200**

5.4.1 तत्सम

5.4.2 तत्भव

5.4.3 देशज शब्द

5.4.4 अंग्रेज़ी

5.4.5 अरबी - फारसी

❖ निष्कर्ष 201

संदर्भग्रंथ सूची **202 - 205**

❖ **उपसंहार** **206 - 214**

❖ **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची** **215 - 226**